अद्भुत हीरे

एक दिन राजा विक्रमादित्य के दरबार में एक सन्यासी आया और राजा को भेंट के रूप में एक जंगली फल दिया। पहले तो राजा बहुत चकित हुए, परंतु फिर उन्होंने वह भेंट स्वीकार कर, पास बैठे मंत्री को दे दी। यह सिलसिला दस वर्ष तक चलता रहा।

एक दिन, प्रतिदिन की तरह, सन्यासी जंगली फल लेकर आया, किंतु इस बार राजा ने वह फल पास बैठे अपने पालतू बंदर को दे दिया। जैसे ही बंदर ने वह फल खाया, उसमें से एक अद्भुत हीरा निकला। यह देखकर राजा आश्चर्यचकित हो गए। जब राजा ने पिछले दस वर्षों से मिल रहे जंगली फलों को देखा, तो उन सभी के बीच अलौकिक हीरे चमक रहे थे।

राजा विक्रमादित्य ने सन्यासी से इसका रहस्य पूछा, तो संन्यासी ने उत्तर दिया कि होश न हो, तो जिंदगी ऐसे ही चूक जाती है। जिंदगी प्रतिदिन हमें ऐसे ही फल देती है, परंतु तुम जंगली समझ फेंकते चले जाते हो और हर फल के अंदर एक अद्भुत हीरा छिपा है जिसे देखने में तुम असमर्थ हो। परंतु अब तुम पीछे (भूतकाल) की तरफ मत जाओ अन्यथा फिर चूक जाओगे और आगे (भविष्य) की तरफ भी मत दौड़ो, वरना वर्तमान से रिश्ता छूट जायेगा।

वर्तमान में जीवन द्वारा प्रदत्त हीरों का आनंद लो।

**** प्रत्येक शुक्रवार को एक नई प्रेरक कथा पढ़िये।****

अधिक प्रेरक लघुकथाओं के लिए हमारा ऐप डाउनलोड करें : Vikram Samvant Hindu Calender